Subject :- Sociology Date :- 17/04/2020
class :- B-I (H) & (Sub.) Paper :- 1st (समाजशास्त्र परिचय)

Topic :- सामाजिक नियंत्रण एवं इसके क्रियातंत्र

BY :- Dr. Shyamanand Choudhary, Guest Teacher
Marwari college, Darbhanga, 9507941619
online study Material No. - (40)

सामाजिक नियंत्रण

समाजशास्त्रीय अध्ययन में सामाजिक नियंत्रण का महत्वपूर्ण स्थान है। सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने में सामाजिक नियंत्रण का होना आवश्यक है। यदि समाज में नियंत्रण की व्यवस्था न हो, तो किसी भी व्यक्ति का जीवन सुरक्षित नहीं रह सकेगा। ऐसी स्थिति में एक स्वस्थ समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। यही कारण है कि हर तरह के समाज में चाहे वह सरल हो या जटिल, नियंत्रण की व्यवस्था अवश्य देखी जाती है। सामाजिक नियंत्रण एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति को समाज के अनुकूल आचरण करने के लिए बाध्य किया जाता है।

विशिष्ट अर्थों में सामाजिक नियंत्रण का अभिप्राय सम्पूर्ण समाज-व्यवस्था के नियंत्रण से लिया जाता है। जिसका उद्देश्य सामाजिक आदर्शों को प्राप्त करना है।

सामाजिक नियंत्रण के कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएँ इस प्रकार है :-

गिलीन एवं गिलीन के शब्दों में- "सामाजिक नियंत्रण विभिन्न प्रकार के सुझावों, अनुनय, प्रतिरोध तथा दमन जिसमें कि शारीरिक बल के साथ-साथ सभी साधनों की व्यवस्था है जिससे कि कोई समाज अपने उपसमूहों के व्यवहार को स्वीकृत प्रतिमानों के अनुरूप बनाता है या जिससे कि कोई समाज अपने उपसमूहों के व्यवहार को स्वीकृत प्रतिमानों के अनुरूप बनाता है या जिससे कि कोई समूह अपने सदस्यों के व्यवहारों को अपने अनुकूल रूप में ढाल देता है।" इस परिभाषा से दो बातें स्पष्ट होती है, सामाजिक नियंत्रण विभिन्न साधनों की व्यवस्था है, जिसमें सुझाव से लेकर बल प्रयोग तक आते है, और इन विभिन्न साधनों की मदद से समूह व समाज अपने सदस्यों

Scanned with CamScanner

को समाज के प्रतिमानों के अनुकूल बनाने का प्रयास करता है।

रोस के अनुसार- "सामाजिक नियंत्रण उन साधनों की व्यवस्था है, जिनके सहारे समाज अपने सदस्यों को स्वीकृत व्यवहार-प्रतिमानों के अनुकूल बनाता है।" इस परिभाषा से भी दो बातें स्पष्ट होती है, पहली की सामाजिक नियंत्रण अनेक विधियों की एक व्यवस्था है, और समाज इन विधियों के सहारे व्यक्ति को अपने अनुकूल बनाने का प्रयत्न करता है।

मैकाइवर एवं पेज के शब्दों में- "सामाजिक नियंत्रण का अर्थ उस ढंग से है जिससे सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था में एकता बनी रहती है तथा जिसके द्वारा यह व्यवस्था एक परिवर्तनशील संतुलन के रूप में कार्य करती है।" इस परिभाषा से तीन बातें स्पष्ट होती है, सामाजिक नियंत्रण एक विधि है, इस विधि की सहायता से सामाजिक व्यवस्था में एकता बनी रहती है और इस नियंत्रण के सहारे ही समाज परिवर्तित परिस्थितियों में भी अपने को बनाये रखती है।

ऑगबर्न एवं निमकॉफ के अनुसार- "सामाजिक नियंत्रण दबावों का प्रतिमान है, जिसको समाज व्यवस्था एवं स्थापित नियमों को बनाये रखने हेतु प्रयोग करता है।" इस कथन से स्पष्ट है कि सामाजिक नियंत्रण दबावों का प्रतिमान है। इसके माध्यम से समाज में व्यवस्था बनाये रखना होता है।

उपरोक्त परिभाषाओं के आलोक में कहा जा सकता है कि समाज में व्यवस्था संगठन एवं एकता बनाये रखने के लिए व्यक्ति व समाज पर नियंत्रण रखना ही सामाजिक नियंत्रण है।

सामाजिक नियंत्रण के क्रियाविधि / क्रियातंत्र

सामाजिक नियंत्रण के क्रियाविधि / क्रियातंत्र इस प्रकार से हैं:-

1. समाजीकरण (Socialization) → समाज में सामाजिक नियंत्रण की प्रक्रिया समाजीकरण की प्रक्रिया के साथ ही प्रारंभ हो जाती है। यह जीवन-पर्यन्त चलती रहती है। समाजीकरण के दौरान एक व्यक्ति सामाजिक मूल्यों, प्रतिमानों एवं संस्कृति

Scanned with CamScanner

आदि को सीखता है। इन तत्वों का व्यक्तियों द्वारा आत्मीकरण करने से ही सामाजिक व्यवस्था बनी रहती है। परिवार, पड़ोस, दोस्त-समूह/क्रिड़ा समूह, आर्थिक एवं राजनीतिक संस्थाएँ आदि समाजीकरण एवं नियंत्रण में सहायक होती है।

2. सामाजिक अन्तः क्रिया (Social Inter-action) → प्रत्येक समाज में अनेक व्यक्ति होते है। ये व्यक्ति अपनी इच्छाओं की पूर्ति के सन्दर्भ में दूसरों के साथ अन्तः क्रियात्मक सम्बन्ध स्थापित करते हैं। इस प्रकार क्रिया के क्रम में विचार, भावनाएँ, मनोवृत्तियाँ आदि बहुत स्पष्ट हो जाती है। इनमें से कुछ विचार व भावनाएँ अधिकांश लोगों के द्वारा स्वीकृत एवं मान्य हो जाते है। कालान्तर में यही संस्थाओं का रूप धारण कर लेती है। इन संस्थाओं के आधार पर सामाजिक व्यवस्था का निर्माण होता है। इस प्रकार संस्थागत रूप में संगठित एक समाज व्यवस्था में जो अन्तःक्रिया चलती रहती है उसी से सामाजिक नियंत्रण होता है।

3. संस्थाकरण (Institutionalization) → मानवीय क्रियाओं और उनसे उत्पन्न सम्बन्धों का समन्वय करना और सामाजिक व्यवस्था में संतुलन करना है। पारसन्स का कहना है कि संस्थाओं द्वारा सामाजिक व्यवस्था में संतुलन दो रूपों में किया जाता है - समय-सूची और संस्थागत प्राथमिकताएँ।

* समय सूची (Time-Schedule) → आज के जटिल समाज में बिना समय-सूची के प्रायः कोई कार्य सही ढंग से नहीं किया जा सकता। अतः संस्थाओं द्वारा यह तय किया जाता है कि कौन सी मानवीय क्रिया किस समय तथा किस स्थान पर की जाएगी।

* संस्थागत प्राथमिकताएँ (Institutional Priorities) → इसमें किस क्रिया को पहले किया जाए और किसे बाद में इसका व्यवस्था करना संस्थागत प्राथमिकताएँ के द्वारा निर्धारित किया जाता है। इससे मनुष्य के विभिन्न क्रियाओं के बीच समन्वय एवं नियंत्रण रहता है।

4. द्वैतीयक संस्थाएँ (Secondary Institutions) → पारसन्स, अमेरिका युवक संस्कृति का उदाहरण देते हुये कहा है कि यह युवकों को व्यवहारों को नियंत्रित और नियमित करती है। साथ ही संस्थागत प्रतिमान के अनुसार व्यवहार करने के लिए प्रेरित करती है। इसके अतिरिक्त, औपचारिक शिक्षा के द्वारा भी व्यवहार का समन्वय

Scanned with CamScanner

और संतुलन होता है।

5. अवरोधन एवं पृथक्करण (Insulation & Isolation) → अवरोधन द्वारा समाज में विघटन उत्पन्न करने वाली शक्तियों पर रोक लगा दी जाती है एवं संघर्ष की संभावना को कम कर सामाजिक व्यवस्था को छिन्न-भिन्न होने से बचाया जाता है।

पृथक्करण के अन्तर्गत सामाजिक व्यवहार को संतुलित करने वाले कुछ प्रमुख सांस्कृतिक प्रतिमानों को संघर्षमय तत्वों से अलग रखने की चेष्टा की जाती है। जिससे समाज के लोग अपनी क्रियाओं को सांस्कृतिक प्रतिमानों के अनुरूप ढालने का प्रयत्न करें और सामाजिक संतुलन की व्यवस्था बिगड़ने न पाए।

इस प्रकार अवरोधन एवं पृथक्करण दोनों ही तत्वों को पारसन्स ने सामाजिक नियंत्रण का मैकेनिज्म माना है।

6. पुरस्कार एवं दण्ड (Reward & Punishment) → प्रत्येक समाज में ऐसी व्यवस्था पायी जाती है जिसके अन्तर्गत स्वीकृत व्यवहार प्रतिमान के अनुरूप कार्य करने वाले व्यक्तियों को पुरस्कृत किया जाता है। इसके विपरीत जो व्यक्ति स्वीकृत व्यवहार प्रतिमान के विरुद्ध कार्य करते हैं उन्हें दण्ड की व्यवस्था है। ये दोनों ही विधियाँ सामाजिक नियंत्रण में सहायक होती है।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि सामाजिक नियंत्रण के एकाधिक मैकेनिज्म है। पारसन्स का ऐसा मानना है कि सामाजिक संगठन एवं प्रगति सामाजिक नियंत्रण के मैकेनिज्म की प्रभावपूर्ण क्रियाशीलता पर निर्भर है।

S.N. Choudhary
Deptt. of Sociology
Marwari College, Darbhanga
17/04/2020

Scanned with CamScanner